INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HANDWRITTEN NOTES

2022

प्रयोगशाला सहायक
(LAB. ASSISTANT)

RSMSSB

भाग-1 इतिहास + कला एवं संस्कृति (राजस्थान)

LATEST EDITION

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत
2. राजस्थान की प्रमुख प्रागैतिहासिक सभ्यतायें
3. राजस्थान के प्रमुख राजवंश एवं उनकी उपलब्धियां
4. मुग़ल राजपूत संबंध
5. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
6. राजस्थान की रियासतें एवं ब्रिटिश संधियां
7. 1857 का जन आंदोलन
8. कृषक एवं जन-जाति आंदोलन
9. प्रजामंडल आन्दोलन
10. राजस्थान का एकीकरण
11. राजस्थान का राजनीतिक जनजागरण एवं विकास

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कला एवं संस्कृति, साहित्य परम्पराएं एवं विरासत

1. स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं
2. महत्वपूर्ण किले, स्मारक एवं सरंचनायें
3. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन
4. लोक देवी एवं लोक-देवता
5. राजस्थान की प्रमुख चित्र कलाएँ एवं शैलियां
6. हस्तशिल्प कलाएँ
7. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य की प्रमुख कृतियां, क्षेत्रीय बोलियां
8. मेले एवं त्यौहार
9. लोक संगीत
10. लोक नृत्य
11. वाद्य यंत्र
12. आभूषण
13. राजस्थानी संस्कृति परंपरा एवं विरासत
14. महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट - प्रिय छात्रों, Infusion Notes (इन्फ्यूजन नोट्स) के "राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)" के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (9694804063, 8504091672, 8233195718) | किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है | अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी |

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

परिचय -

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वें एक इतिहासकार थे।

हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई.पू), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। हिरोडोटस का संस्कृत नाम हरिदत्त था वह वास्तव में एक मेड थे। इसी कारण उन्होंने लगातार आर्यों के मेड इतिहास पर अपनी नज़र बनाये रखी थी। उनके द्वारा हीपारसके मेड आर्य राजा ओं का सही इतिहास पता चलता है । उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिष्ट्रीरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जातीहै। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिस के लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ान हीं गया है इसलिए इसलिए सभ्यता को आद्यऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपिक हते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाई से बाई ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगाकी सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक का लजि समेंवेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है। प्राचीन इतिहास के स्त्रोत-पुरातात्वीक एवं साहित्यिक

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्त्रोतः-**

  इतिहास का शाब्दिक अर्थ- ऐसा निश्चित रूप से हुआ है। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता हैं लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होने भारत का उल्लेख भी किया हैं।

  भारतीय इतिहास के जनक महाभारत के लेखक वेद व्यास माने जाते है। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिता" था।

- राजस्थान इतिहास के जनक कर्नल जेम्सहाडॅ कहे जाते हैं। वे 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्राप्त के पोलिटिकल एजेन्ट थे उन्होने घोडे पर धूम-धूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा।

- अतः कर्नल टाड को "घोडे वाले बाबा" कहा जाता है। इन्होने "एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज आफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरी शंकर हिराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सैंटर्ल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट आफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टाड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टन इण्डिया" का इसकी मृत्यु के पश्चात् 1837 में इनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।

- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है ।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- तिथि युक्त एवं समसामयिक होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी वराजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।
- शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के ढाई दिन के झोंपड़े के गुंबज की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई.का है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अशोक के अभिलेख :

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज केप्टन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख सेअशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती हैं।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

बड़ली का अभिलेख :

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख हैं। 443 ई.पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के मिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ हैं।
- इससे अर्बुदांचल के राजा रजिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती हैं।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख हैं।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता हैं।

मानमोरी का अभिलेख :

- 713 ई.का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण हैं।
- इस अभिलेख में इसके रचयिता पुष्य तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख हैं।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांगद के बारे में जानकारी मिलती हैं।

- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड ने इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया था।
- इस अभिलेख में अमृत मंथन का उल्लेख मिलता है।

इस अभिलेख में चार .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

आहड़ से प्राप्त सिक्के :-आहड़ से 6 तांबे की मुद्राएं मिली हैं।

- इसके अलावा यहाँ से इण्डो-ग्रीक मुद्राएं तथा कुछ मुहरें प्राप्त हुई हैं।

रैढ़ (टोंक) से प्राप्त सिक्के :

- रैढ़ में उत्खनन से 3075 चांदी के पचंमार्क सिक्के मिले हैं जो देश में उत्खनन से प्राप्त सिक्कों की सर्वाधिक संख्या है।
- ये सिक्के मौर्यकाल के हैं जिन्हें 'धरण' या 'पण' कहा जाता था।
- इन सिक्कों का वजन 57 ग्रेन है तथा इनका समय छठी शताब्दी ई.पूर्व से द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व है।
- रैढ़ से प्राप्त इन सिक्कों को मालव, इण्डो सेसेनियम, सेनापति आदि वर्गों में रखा गया है।

बैराठ से प्राप्त सिक्के :-

- बैराठ में उत्खनन से कपड़े में बंधी हुई 8 आहत मुद्राएं प्राप्त हुई हैं।
- इसके अलावा यहाँ से 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी मुद्राएं प्राप्त हुई हैं जिसमें से 16 सिक्के यूनानी शासक मीनेण्डर के हैं।

रंगमहल से प्राप्त सिक्के :

- रंगमहल (हनुमानगढ़) से105 तांबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं जिनमें आहत तथा कुषाण कालीन मुद्राएं शामिल हैं।
- यहाँ से प्राप्त कुषाण कालीन सिक्कों को मुरण्डा कहा गया है।
- रंगमहल से कुषाण शासक कनिष्क का भी सिक्का प्राप्त हुआ है।

सांभर से प्राप्त सिक्के :

- सांभर (जयपुर) में उत्खनन से 200 मुद्राएं प्राप्त हुई है जिनमें पंचमार्क तथा इण्डो सेसेनियम मुद्राएं शामिल है।
- यहाँ से यौद्धेय तथा इण्डो-ग्रीक मुद्राएं भी प्राप्त हुई है। एक यौद्धेय सिक्के पर ब्राम्ही लिपि में 'बाबुधना' तथा 'गण' अंकित है।

नगर (टोंक) से प्राप्त सिक्के :-

- टोंक जिले के नगर या कर्कोट नगर से कालाईल को लगभग6 हजार तांबे के सिक्के प्राप्त हुए है।
- यह अनुमान लगाया जाता है कि मालव जनपद की टकसाल नगर में रही होगी।
- ये सिक्के अन्य सिक्कों की तुलना में सबसे छोटे तथा हल्के है।

यौद्धेय जनपद के सिक्के :

- प्राचीन समय के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित यौद्धेय जनपद से सिक्के मिले है।
- इन सिक्कों पर नंदी एवं स्तंभ का अंकन तथा ब्राम्ही लिपि में 'यौधेयानां बहुधान' लिखा हुआ मिला है।

गुप्तकालीन मुद्राएँ :

- 1948 में बयाना (भरतपुर) से सर्वाधिक गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुई है जिनकी संख्या लगभग 1800 है।
- इन सिक्कों में सर्वाधिक सिक्के चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय के है।

इसके अलावा राजस्थान में टीबा (जयपुर), नलियासर (सांभर), ग्राम-मोरोली (जयपुर), रैढ़ (टोंक),अहेड़ा (अजमेर), देवली (टोंक) तथा सायला आदि से .....

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रियासत	प्रचलित सिक्के
मेवाड़	चित्तौड़ी, भिलाड़ी, सिक्का एलची, चांदौड़ी, उदयपुरी, स्वरूपशाही, ढींगला, शाहआलमी,भीडरिया, पारथक्रम।
मारवाड़	भीमशाही, विजयशाही, गजशाही, लल्लूलिया, फदिया, गधिया
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली
बीकानेर	गजशाही, आलमशाही (मुगलिया सिक्का)
जैसलमेर	अखैशाही, मुहम्मदशाही, डोडिया (ताँबे के सिक्के)
बूंदी	कटारशाही, चेहरेशाही, रामशाही, पुराना रुपया, ग्यारह-सना

डूंगरपुर	त्रिशूलिया, पत्रीसीरिया, उदयशाही, सालिमशाही, चितौड़ी
धौलपुर	तमंचाशाही
अलवर	अखैशाही, रावशाही, अंग्रेजी पाव आना सिक्का
झालावाड़	पुराने मदनशाही, नये मदनशाही
सलूम्बर	पदमशाही
बांसवाड़ा	सिलमशाही, लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ़	सिलमशाही, आलमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक लंदन
शाहपुरा	संदिया, चित्तौड़ी, भिलाड़ी, माधोशाही
करौली	माणकशाही, कटार झाड़शाही
किशनगढ़	शाहआलमी, चांदोड़ी सिक्का
कोटा	मदनशाही, हाली, गुमानशाही, लक्ष्मणशाही
सिरोही	चाँदी का भिलाड़ी, ताँबें का ढब्बूशाही
नागौर	अमरशाही

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

अध्याय – 3

राजस्थान के प्रमुख राजवंश एवं उनकी उपलब्धियां

- **गुर्जर प्रतिहार वंश**

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-।0वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली/गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था । गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' का सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत सी-यू-की में कु-चे-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है ।

- जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को ' जुर्ज ' भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है । भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुजर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते है । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते है ।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।

प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का.....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 Ist शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (Ist शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

भीनमाल शाखा (जालौर) :-

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों के उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।

प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति/उज्जैन शाखा

नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा : -

नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

कवि वृष की उपाधि मुंज राजा को दी गई थी ।

आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।

गुर्जरों तथा अन्य पिछड़ी जातियों (एस बी सी) के लिए राजस्थान सरकार ने 2015 मे 5 प्रतिशत कोटे की व्यवस्था की ।

मण्डोर शाखा (जोधपुर) :-

संस्थापक - रज्जिल

गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डोर थी । गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डोर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुर्स/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते हैं ।

हरिश्चंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा थी ।

इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण के प्रमुख कारण निम्न थे।

- चित्तौड़ का प्रभाव या शक्ति निरंतर बढ़ रही थी।
- अल्लाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी नीतियां अर्थात् वह अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।
- चित्तौड़ व्यापारिक दृष्टी से और युद्ध की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी के लिए चित्तौड़ को जीतना प्रतिष्ठा का सवाल था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी, रानी पद्मिनी की सुन्दरता से काफी प्रभावित था।

रानी पद्मिनी या पद्मावती

वह सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी। उनके पिता का नाम "गन्धर्व सेन" था और उनकी माता का नाम "चम्पावती" था।

राघव चेतन ने अल्लाउद्दीन खिलजी को पद्मिनी की सन्दरता के बारे में बताया था। 1303 में जब अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो चित्तौड़ में पहला साका हुआ, साका में स्त्रियाँ जौहर करती है और पुरुष केसरियां करते है।

इस साका में रानी पद्मिनी ने 1600 अन्य महिलाओ के साथ जौहर किया और दूसरी तरफ रतन सिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया। रतन सिंह के सेनापति "गौरा" और बादल थे। अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया और अधिकार करने के बाद अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुस्से में 30000 लोगो का नरसंहार करवा दिया। अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ अपने बेटे "खिज्र खां" को सौप दिया और चित्तौड़ का नाम बदलकर अपने बेटे के नाम पर नाम "खिज्राबाद " कर दिया। खिज्र खां ने 'गंभीरी नदी पर एक पल का निर्माण करवाया।

खिज्र खां ने चित्तौड़ में एक मकबरे का भी निर्माण करवाया और इस मकबरे पर एक फ़ारसी भाषा में अभिलेख लिखवाया इस अभिलेख में अल्लाउद्दीन खिलजी को "संसार

का रक्षक" और "इश्वर की छाया " बताया गया है। बाद में चित्तौड़ का किला "मालदेव सोनगरा" को सौंप दिया गया, मालदेव .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

'कच्छवाहा' वंश

कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।

संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुजरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।

दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।

इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

कछवाहा वंश के प्रमुख शासक

पृथ्वीसिंह

यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा सांगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमदेव नाराज हो जाता है।

भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र रतनसिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा सांगा शत्रुता रखने लग जाता है, सांगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर सांगानेर बसाता है, सांगा की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई भारमल रतनसिंह से शत्रुता रखने लग जाता है. भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।

रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

भारमल (1547-1574 ई.)

भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।

भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।

मुगल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

अकबर और राजस्थान यात्रा :

अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यही उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।

इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

जोधा अकबर विवाह:

अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है।

जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुगल विवाह सम्बन्ध था।

भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी।

अकबर ने भारमल को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की थी तथा उसके पुत्र भगवंतदास व पौत्र मानसिंह को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त किया ।

भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।

उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।

मानबाई को सुल्तान निस्सा' की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।

1562 में जब भारमल (Raja Bharmal) अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवंतदास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।

भगवानदास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।

अकबर ने भगवंत दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत 1589 में भगवंत दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।

मानबाई को मुगल दरबार में सुल्ताना मस्ताना' के नाम से जाना जाता था। खुसरो इसी का पुत्र था, जहाँ गीर के अत्यधिक शराबी होने के कारण मानबाई ने 1608 में आत्महत्या कर ली थी।

मानबाई का शाही मकबरा इलाहाबाद में स्थित है।

मानसिंह (1589-1614 ई.)

मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।

मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।

मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की ।

मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था ।

1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था।

अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की।

वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।

मानसिंह ने बंगाल में अकबर नगर तथा बिहार में मानपुर नगर को बसाया ।

मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता था।

शिलादेवी (आमेर), जगत शिरोमणी (आमेर) गोविन्द .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

अध्याय – 5

राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

प्रमुख व्यक्ति

विश्व में प्रत्येक कालखंड में ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को एक नई राह दिखाई है।

जिन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा अपने कार्यों से समाज को ही नई राह नहीं दिखाई अपितु देश को भी नई राह दिखाने की कोशिश की और अपने राज्यों का अपने कुटुंब का अपने माता-पिता का नाम रोशन किया।

ऐसे ही कुछ व्यक्तियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है जिन्होंने राजस्थान का नाम इस देश में ही नहीं बल्कि संसार में भी रोशन किया है।

हीरालाल शास्त्री

जन्म 24 नवंबर 1891 जन्म स्थल जोबनेर जयपुर वनस्थली विद्यापीठ नमक महिला शिक्षण संस्थान के संस्थापक शास्त्री जी भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के प्रधानमंत्री तथा 30 मार्च 1949 को वृद्ध राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री बने टोंक जिले के निवाई तहसील के वनस्थली ग्राम में स्थित जीवन कुटीर नामक संस्था के संस्थापक शास्त्री जी 1958 से 62 तक सवाई माधोपुर के लोकसभा सदस्य रहे तथा 28 दिसंबर 1974 को स्वर्ग सिधार गए प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र नामक पुस्तक का लेखक किया एवं प्रशिक्षण नमो नमो नमः गीत लिखा जो बहुत लोकप्रिय हुआ

मोतीलाल तेजावत

16 मई 1887 जन्म स्थल कोलिया उदयपुर आदिवासियों का मसीहा बाबू जी का जाने वाली स्वतंत्रता सेनानी मोतीलाल तेजावत ने 1920 में चित्तौड़गढ़ स्थित मात्र कुंडिया नामक स्थान पर एक ही आंदोलन प्राप्त किया जिसके माध्यम से सर्वप्रथम पोलो में

राजनीतिक जागृति पैदा हुई उदयपुर चित्तौड़गढ़ से लोकसभा सदस्य राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष रहे तेजावत दिसंबर 1963 को स्वर्ग सिधार गए

भोगीलाल पांडया

"वागड़ की गांधी" नाम से लोकप्रिय भोगीलाल पंड्या का जन्म आदिवासी जिला डूंगरपुर के सीमलवाडा ग्राम में 13 नवंबर, सन 1904 को हुआ। इन्होंने आदिवासी समाज में आत्म स्वाभिमान, शिक्षा का प्रकाश, कुप्रथाओं से छुटकारा और जागरूकता का दीप प्रज्वलित किया। 15 मार्च, 1938 को डूंगरपुर में "वनवासी सेवा संघ" की स्थापना की। 1 अगस्त, 1944 को डूंगरपुर में प्रजामंडल की स्थापना की। 1975 में भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से अलंकृत

इसका उद्देश्य डूंगरपुर रियासत में महारावल की छत्रछाया में उत्तरदाई शासन की स्थापना करना था। 31 मार्च, 1981 को इनकी मृत्यु हुई।

गोकुल भाई भट्ट

जन्म 25 जनवरी 1818 उपनाम राजस्थान के गांधी जन्म स्थल हाथल सिरोही जमनालाल बजाज पुरस्कार 1982 से सम्मानित भट्ट जी मैं 1972 से 1981 तक मध्य निषेध के लिए अथक प्रयास किया सन 1948 ईस्वी में राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष भट्ट जी ने सिरोही राज्य में प्रजामंडल की स्थापना की एवं राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया आबू का राजस्थान में विलय उनके प्रयासों से हुआ

मोहनलाल सुखाडिया

जन्म 31 जुलाई 1916 जन्म स्थल नाथद्वारा राजसमंद राजस्थानी राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाडिया 13 नवंबर 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 17 वर्ष तक राजस्थान में शासन किया राजस्थान में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का गौरव प्राप्त है उन्होंने इंदुबाला के साथ अंतरजातीय विवाह करके मेवाड़ में रहते सामाजिक जीवन

में क्रांति लाई राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन में श्री सुखाड़िया की भूमिका सर्वप्रथम राजस्व मंत्री के रूप में तथा तत्पश्चात मुख्यमंत्री के रूप में महत्वपूर्ण रही राजस्थान में मुख्यमंत्री तू के पश्चात वे दक्षिण भारत के 3 राज्य कर्म से कर्नाटक आंध्र प्रदेश तमिलनाडु के राज्यपाल रहे

जमुना लाल बजाज

जन्म 4 नवंबर 1889 जन्म स्थल काशी का बास सीकर गांधीजी के पांचों पुत्र के जाने वाले जमनालाल बजाज ने गांधीजी के नवजीवन साप्ताहिक हिंदी संस्थान का समूचा वित्तीय भार उठाया अंग्रेजों द्वारा दी गई रायबहादुर नामक उपाधि को………………..

***नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 Ist शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (Ist शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

महान व्यक्तियों के उपनाम

- राजस्थान के गाँधी - गोकुल भाई भट्ट।
- बांगड़ के गाँधी - भोगीलाल पण्ड्या।
- गांधीजी के पांचवें पुत्र - जमनालाल बजाज।
- राजस्थान की मरु कोकिला - गंवरी बाई।
- राजस्थान की राधा - मीराबाई।
- राजपूताने का अबुल फजल - मुहणौत नैणसी।
- मारवाड़ का प्रताप - महाराजा चन्द्रसेन।
- हल्दीघाटी का शेर - महाराणा प्रताप।
- लोक कलाओं के कमल पुष्प - देवीलाल सामर।
- राजस्थान केसरी - केसरी सिंह बारहट।
- भारतीय इतिहास साहित्य के पुरोधा - गौरी शंकर ओझा।
- राजस्थान की मांड मल्लिका - श्रीमती गंवरी देवी।
- सेवा, चिंतन तथा राजनीती के त्रिवेणी - श्री हरिभाऊ उपाध्याय।
- राजस्थान के सहृदय - डॉ. प्रभुनारायण शर्मा।
- राजस्थान के अर्जुन - लिम्बाराम।
- पोलो विश्व विजेता - कर्नल किशन सिंह।
- राजस्थान के लोकनायक - जयनारायण व्यास।
- 'दा साहब ' - श्री हरिभाऊ उपाध्याय।
- धुन के धनी - जय नारायण व्यास।
- 'लक्कड़ और कक्कड़ ' - जय नारायण व्यास।
- अक्कड़ और पियक्कड़ - कवि सूर्यमल मिश्रण।
- शेखावटी का शेर-ए-दिल - ओलम्पिक राधेश्याम।
- राजस्थान के बॉलीबाल टाइगर - सुरेश मिश्रा।
- कलियुग का कर्ण - राव लूणकरण (बीकानेर शासक)
- राजपूताने का कर्ण - रायसिंह।

- राजस्थान के संगीत सम्राट - आलड़िया खान।
- राजस्थान के चितरंजनदास - मुकुट बिहारी लाल भार्गव (हरिभाऊ उपाध्याय ने कहा)
- आदिवासियों के मसीहा - मोतीलाल तेजावत ।
- बांगड़ की मीरा (मीरा का अवतार) - गंवरी बाई।
- शेर-ए-भरतपुर - गोकुल वर्मा।
- भारत की मोनालिसा - बणी-ठणी।
- राजस्थान इतिहास लेखन के पितामह - जेम्स कर्नल टॉड।
- राजस्थान का कबीर - दादूदयाल।
- डिंगल भाषा का हैरोस - पृथ्वीराज राठौड़।
- राजस्थान का नृसिंह - संत दुर्लभजी।
- राजस्थान का लोह पुरुष - दामोदर व्यास (टोंक)
- "दादीजी" - राणी सती (झुंझुनू)
- "बावजी" - मोतीलाल तेजावत (भील नेता)
- जंगलधर बादशाह - लूणकरण (बीकानेर). कर्ण सिंह (बीकानेर)
- "रानीजी" - लेखिका लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत
- सुल्तान तारेकिन (सन्यासियों के सुल्तान) - हमीदुद्दीन नागौरी।
- कलियुग की वाल्मीकि - हरिदास निरंजनी (निरंजनी सम्प्रदाय, नागौर)
- "कवि बांधव" - बीसलदेव (बिग्रहराज चतुर्थ)
- हिन्दूपत (हिंदुआ सूरज) - महाराणा सांगा।
- बांगड़ के धनी - नरहड़ के पीर।
- आधुनिक जयपुर के निर्माता - मिर्जा इस्माइल (मानसिंह द्वितीय के प्रधानमंत्री)
- राजस्थान का नेहरू - पंडित जुगल किशोर चतुर्वेदी (भरतपुर)
- मीलो का चितेरा - गोवेर्धन लाल बाबा (राजसमंद) .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 7

1857 का जन आंदोलन

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थेकर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000हजार दोहो , का अंग्रेजी में अनुवाद किया था
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पोलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी।
- 1-कोटा 2- बूंदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था
  - डॉ रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली– यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
  - वी डी सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)
  - एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।

- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन,सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खां भी सहमत हैं)
- जवाहरलाल नेहरु- यह विद्रोह मुख्यतः सामंतशाही विद्रोह था ।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर- यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था ।
- क्रान्ति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
- देषी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लार्ड डलहौजी की राज्य विलयकीनितिया।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किंतु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी ।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं ,जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था ।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था ।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची

  इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था ।

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

1. कोटा रियासत में-मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में-मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में- मोरिशन
4. जयपुर रियासत में-ईडन
5. उदयपुर रियासत में-शावर्स और
6. सिरोही रियासत में-जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)-

- कोटा रियासत में-राम सिंह
- जोधपुर रियासत में-तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में-जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में-स्वरूप सिंह

जयपुर रियासत में-रामसिंह द्वितीय .....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

अध्याय – 8

कृषक एवं जन-जाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए। राजस्थान में कईं रियासतें किसानों से मनमना कर "लाग" वसूलती थी। इनके विरोध में समाय समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये। इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया /

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन (बिजौलिया किसान आंदोलन हिंदी में): बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था। बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लंबा चला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब ५५ साल तक चला गया।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली

संस्थापक अशोक परमार

बिलोलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरे अधिक थी।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिलोलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आन्दोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व -साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व - माणिक्यलाल वर्मा, हरिभाऊ उपाधाय जमनालाल बजाज, रामनारायण चैधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान राम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़े के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमात पंचबोर्ड (उपरमात पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजौलिया किसान आन्दोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमात डंका थे।
- 1919 में बिन्द्रलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आन्दोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान कि दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने

की सिफारिश की किन्तु मेवाड के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।

1922 में राजपुताना का ए.जी. जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और .....

***नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें - 8504091672, 9694804063, 8233195718

हार्डिंग्ज बम काण्ड

23 दिसम्बर, 1912 ई. को दिल्ली के तत्कालीन गवर्नर जनरल हार्डिंग्ज के जुलूस पर रासबिहारी बोस की योजना के अनुसार पंजाब नेशनल बैंक (चाँदनी चौक दिल्ली) की छत पर चढकर जोरावर सिंह बारहठ, बसंत कुमार विश्वास तथा अर्जुनलाल सेठी ने बम फेंका ।

इस काण्ड में अर्जुनलाल सेठी को बेलूर जेल में भेज दिया गया ।

चूरू का धर्मस्तुप

- 26 जनवरी 1930 ई. को चंदनमल बहड़ तथा गोपालदास ने चूरू के धर्म स्तूप पर तिरंगा फहराया ।
- बीकानेर में सामाजिक जनजागृति फैलाने वाले पण्डित कन्हैयालाल ढूण्ड व उनके शिष्य गोपालदास थे ।
- इस सभा द्वारा लडकियों के लिए पुत्री पाठशाला व दलितों के लिए कबीर पाठशाला की स्थापना की ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रावला-घडसाना आंदोलन

2004 में यह आंदोलन श्रीगंगानगर जिले में हुआ । इस आंदोलन के सूत्रधार हेतराम बेनीवाल है ।

इस आंदोलन के कार्यकर्ता श्योपत सिंह मक्कासर व सतलेखासिंह हैं ।

रावला-घड़साना आंदोलन में चंदूलाल शहीद हुआ । रावला-घड़साना आंदोलन के लिए सर्वप्रथम केजरीवाल आयोग की स्थापना की गई ।

केजरीवाल आयोग के पश्चात इसकी जाँच गोयल आयोग को सौंपी गई ।

आदिवासी आंदोलन

कर्नल टॉड ने "भीलों को वनपुत्र" बताया है।

गोविन्दगिरी

- बाँसवाड़ा और डूँगरपुर क्षेत्र में आदिवासी को जगाने का काम गोविन्दगिरी ने किया था। गोविन्दगिरी का जन्म स्थान बाँसिया जिला डूँगरपुर। गोविन्दगिरी के गुरु राजगिरी थे।
- गोविन्दगुरु को "आदिवासियों का दयानन्द सरस्वती" भी कहा जाता है। गोविन्दगुरु ने 1883 ई. में सम्प सभा बनायी थी। इनकी 10 प्रमुख शिक्षाएँ है गोविन्दगिरी की जाति बंजारा थी और इनके आंदोलन कि सबसे महत्त्वपूर्ण घटना 17 नवंबर 1913 को मानगढ़ (बाँसवाड़ा) हत्याकांड हुआ। मानगढ़ को राजस्थान को जलियावाला बाग भी कहा जाता है जिसमें 1500 आदिवासी शहीद हुए थे।
- गोविन्द गुरु का अंतिम समय कम्बोई गुजरात में व्यतीत हुआ था।
- गोविन्दगुरु ने 1910 में लसाड़िया पंथ बनाया था।

मोतीलाल तेजावत

- जन्मस्थान कोलयारी (उदयपुर) झाड़ोल-फलासिया क्षेत्र जाति-ओसवाल,
- उपाधियाँ - "आदिवासियों का मसीहा, बावजी, आदिवासियों के लिए गाँधीजी का दूत"।
- मोतीलाल तेजावत का आन्दोलन एकी आन्दोलन कहलाता है। 1921 ई. में वैशाख पूर्णिमा के दिन मातृकुण्डिया चित्तौड़ से एकी आन्दोलन प्रारम्भ होता है मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह को प्रस्तुत 21 सूत्री मांग पर मेवाड़ की पुकार" कहलाता है।

नीमणा गुजरात में सभा के दौरान पुलिस गोला बारी में 1200 आदिवासी के शहीद होने को आदिवासी इतिहास का जलियावाला बाग कहते है। मोतीलाल.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान**

प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)" *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें****, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कला एवं संस्कृति, साहित्य परम्पराएं एवं विरासत

अध्याय – I

स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं

राजस्थान की वास्तु परम्परा

महत्वपूर्ण शब्द

संस्कृति : *प्रिय पाठकों , संस्कृति शब्द संस्कार से बना हैं ।जिसका अर्थ कृत्य या अनुष्ठान करना होता हैं। किसी राष्ट्र या समाज की आत्मा होती हैं, जो एक प्रवाहमयजीवन पद्धति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। यह समाज के रहन-सहन वखान-पान का तरीका होता हैं। संस्कृति मुख्यरूप से दो प्रकार की होती हैं एक भौतिक संस्कृति जिसमें भौतिक वस्तुएं आती हैं,जिनका उपयोग मानव द्वारा करके अपने जीवन के ढंग को बदलता हैं। दूसरी अभौतिक संस्कृति इसमें वे सभी नियम कानून आते हैं या रीति-रिवाज प्रथाएँ आती हैं, जिनके द्वारा मानव समाज को नियंत्रित रखा जाता हैं। संस्कृति के दो अंग या उपकरण माने गये हैं एक आन्तरिक अंग जिसे चरित्र कहा जाता हैं, दूसरा बाह्य अंग जिसे कला कहा जाता हैं।*

सभ्यता-*सभ्यता से आशय किसी समाज की कला विशेष में जीवन पद्धति हैं, जो समय के साथ-साथ बदलती रहती हैं।*

कला : *सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु ही कला हैं। कला हिन्दी के दो शब्दों से मिलकर बनी हैं।*

क– *कामदेव- सौन्दर्य, हर्ष, उल्लास*

ला – *देना*

अर्थात् जो खुशी या कामुकता प्रदान करें, वहीं कला है।

संस्कृत में कला का निर्माण कल् धातु से हुआ है जिसका अर्थ प्रेरित करना है जिसमें व्यक्ति विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखकर स्वयं ही ऐसा करने का प्रयास करता है। जबकि अंग्रेजी में Art का तात्पर्य कला होता है, जिसका भावार्थ मानसिक एवं शारीरिक कौशल होता है। कोई भी कार्य करने से पूर्व मानसिक विचार आता है तत्पश्चात् उसको शारीरिक परिश्रम द्वारा रूप दिया जाता है। अर्थात् कला सुन्दर, मधुर, कोमल व सुख देने वाला शिल्प, हुनर अथवा कौशल है।

कला मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है –

I. उपयोगी कला - जो मानव समाज के लिए उपयोगी होती है।

2. ललित कला - जिसके द्वारा सौन्दर्य, हर्ष, कामुकता की अनुभूति होती है। यह निम्नलिखित प्रकार की होती है-

स्थापत्य कला की महत्वपूर्ण विशेषताएं

भवन निर्माण की कला होती है, जिसमें किले, महल, मंदिर, स्तूप आदि आते है।

मूर्तिकला – मूर्ति निर्माण करना। ये प्राय धातु, पत्थर या मिटटी की बनी । होती है, जिसमें संगमरमर की मूर्तिया जयपुर की प्रसिद्ध है, जबकि कांसे की बनी मूर्तिया जोधपुर की प्रसिद्ध है तथा मिट्टी की मौलेला (राजसमंद की प्रसिद्ध है)।

चित्रकला– चित्र बनाने की कला होती है । राजस्थान में ये चित्र दीवार, स्तम्भ, छत, वस्त्र, कागज, भोजपत्र पर बनाये जाते है। उपरोक्त तीनों कलाएं रूप प्रधान कलाएं है, जिसमें सुंदरता पर जोर दिया जाता है।

संगीत कला – इसमें गीत गाना, बजाना व नृत्य करना आता है। इसमें.....

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

राजस्थान की प्रमुख चित्र कलाएँ एवं शैलियां

दोस्तों चित्र कला के उद्भव के संकेत मनुष्य की सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही मिलने लगे थे, जैसे जैसे सभ्यता विकसित होती गयी, वैसे वैसे चित्रकला में भी अधिक प्रवीणता देखी जाने लगी प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की बाद में जब नगरीय सभ्यता सभ्यता का उदय होने लगा तो चित्रकारी गुफाओ से निकल कर दैनिक प्रायोजित होने वाले माध्यमो तक पहुच गयी जिससे इसके नमूने बर्तनों, वस्त्रो आदि पर प्राप्त होने लगते हैं।

राजस्थानी चित्रकला-

राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला के अंतर्गत अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है और भारतीय कला के इतिहास में भी इसका अपना विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी चित्रकला को केवल राजपूत शैली या हिन्दू शैली की संज्ञा देना उचित नहीं है वरन् यह अनेक शैलियों का समन्वित रूप है। कला मर्मज्ञ श्री कुमार स्वामी के अनुसार राजस्थानी चित्रकला एक समृद्ध कला का स्वरुप है

राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल से ही चित्रकारी होती रही है। जिसके साक्ष्य चम्बल नदी घाटी क्षेत्र में तथा क्षेत्रों की पहाड़ियों के शैलाश्रयों में चित्रांकन के रूप में उपलब्ध हुए हैं। हड़प्पा युगीन कालीबांगा एवं ताम्रयुगीन अहाड़ पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त मृद्पात्रों पर की गई चित्रकला उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में पोथियाँ लेखन के साथ चित्रित भी की जाती रही है। यह कार्य भोजपत्रों एवं .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें - 8504091672, 9694804063, 8233195718

किशनगढ़ उपशैली

1. इस शैली के समय प्रमुख शासक राजा सावंतसिंह 'नागरीदास' थे।
2. इस शैली में प्रमुख चित्रित ग्रंथ व विषय बणी-ठणी, चाँदनी रात की संगीत गोष्ठी गीत गोविंद, भागवान गीत आदि पर आधारित चित्र बनाये गए।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार निहालचंद, सूरध्वन मोरध्वज, भंवरलाल, लाडलीदास, छोटू, अमीरचंद, धन्ना थे।
4. इस शैली में प्रमुखतः सफेद एवं गुलाबी रंग का प्रयोग किया गया।
5. इस शैली कि पुरुष आकृति छरहरें पुरुष, पतले अधर, लंबी बाँहे, लंबी ग्रीवा, उन्नत ललाट, मादक भाव युक्त नेत्र, कमर मे दुपट्टा ।
6. इस शैली में नारी आकृति कमल एवं खंजन सी काली आँखे, चाप के समान लंबी भृकुटि, लंबी व सुराहीदार गर्दन, दीर्घनाक, लंबे बाल, लम्बी नायिकाएँ, लँहगा, चोली एवं पारदर्शी आँचल से सज्जित।

विशेष तथ्य

- इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय विद्वान एरिक डिक्सन एवं डॉ. फैयाज अली को जाता है।
- इस शैली की प्रमुख विशेषता 'नारी सोंदर्य' है।

- *यह चित्रशैली कांगड़ा शैली एवं ब्रज साहित्य से प्रभावित है।*
- *इस चित्रशैली का प्रमुख चित्र 'बणी-ठणी' है।*
- *चाँदनी रात की संगोष्ठी-चित्रकार अमीरचन्द द्वारा सांवतसिंह के समय बनाया गया चित्र।*
- *वेसरि (नाक का आभूषण) अनोखा व प्रमुख आभूषण।*

अजमेर उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख चित्रकारचाँद, नबला, तैयब, रायसिंह, लालजी व नारायण भाटी एवं एक महिला चित्रकार साहिबा थे।

2. इस शैली में प्रमुख रंगसुहानी रंग योजना (लाल, पीले हरे, नीले के साथ बैंगनी रंग का विशेष प्रयोग होता है।)

3. इस शैली के प्रमुख आकृति लंबे एवं वीरोचित गुणों से युक्त पुरुष, गोल आँखे, लंबी जुल्फें, बाँकी एवं छल्लेदार मूंछे।

4. इस शैली में नारी आकृति आकर्षक महिलाएँ लंबे, घने एवं काले बाल, पैनी अंगुलियाँ, लहंगा, बसेड़ा एवं आकर्षक आभूषण चित्रित किया गया है।

जैसलमेर उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख शासक महारावल हरराज, अखैसिंह व मूलराज थे।

2. इस शैली के प्रमुख चित्र मूमल है।

3. इस शैली मेंपुरुष आकृति पुरुषों के मुख पर दाढ़ी-मूंछ, तथा.....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

आंखों की बनावट	चित्र शैली
आंखे हिरण के समान	नाथद्वारा शैली
आंखे खजन के समान	किशनगढ़ शैली
आंखे बादाम के समान	जोधपुर शैली
ऊपर-नीचे के रेखा सामांतर	बूंदी शैली
आंखे मछली के समान	उदयपुर, जयपुर शैली

आंखे कमान के समान	किशनगढ़ शैली

पशु - पक्षी	**चित्रशैली**
कौंआ, चील, ऊँट, घोडे	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर,अलवर शैली

शैली	**रंग**
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला
नाथद्वारा	पीला-हरा
अजमेर	पीला-लाल-हरा-बैंगनी
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीला-लाल
कोटा	पीला-हरा-नीला
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 10

लोक नृत्य

लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त किया जाता हैं।राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया हैं।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **सामाजिक-धार्मिक नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

विभिन्न जातीयों के नृत्य एक नजर :-

- **भील :-** -गवरी/राई., युद्ध, द्विचकरी, गोसाई., घूमरा, साद, पालीनोच, हथमनी, नेजा नृत्य।
- **गरासिया :-** -रायण, मोरिया, जवारा, गौर, मॉदल, कूद. लूर, वालर नृत्य
- **कचौड़ी :-** -मावलिया, होली नृत्य।
- **मेव :-** -रणबाजा, रतदई. नृत्य।
- **रेबारी :-** -गैर, लूम्बर नृत्य।
- **सहरिया :-** -लहँगी, शिकारी नृत्य।
- **भील-मीणा :-** -नेजा नृत्य।
- **कंजर** -घोड़ी. लहरी, चकरी. धाकड़ नृत्य।
- **गुर्जर :-** -चरी नृत्य।
- **कालबेलिया :-** -शंकरिया. पणीहारी. बागडियां, इण्डोणी नृत्य।

I. राजस्थान का क्षेत्रीय लोकनृत्य

- **घूमर** – राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका 'घूमर' नृत्य राजस्थान के 'लोकनृत्यों की आत्मा' कहलाता है। यह नृत्य सभी मांगलिक अवसरों पर राज्य के अधिकांश भागों विशेषकर जयपुर एवं मारवाड़ क्षेत्र में किया जाता है। 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति 'घुम्म' से हुईहै, जिसका अर्थ होता है, 'लहंगे का घेर'। घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर 'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं। इसमें मंद गति से कहरवा ताल बजता है। बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला घूमर नृत्य झूमरियो' कहलाता है।

- **ढोल नृत्य** –राजस्थान के जालोर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य, जिसमें नर्तक विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं। यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में कई. ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

- **बिंदौरी नृत्य** –राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य, जिसमें पुरुष भाग लेते हैं।

- **झूमर नृत्य** – हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।

- **चंग नृत्य** –शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।

- **गींदड़** – शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है। गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है। नृत्य में विभिन्न

प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा - दुल्हन, डाकिया-डाकिन, पठाः व सरता के स्वांग प्रमुख हैं।

- **घुड़ला नृत्य** –मारवाड़ क्षेत्र में होली के अवसर पर प्रचलित इस लोक नृत्य के साथ घुड़ला गीत गाए जाते हैं, जिसमें बालिकाएँ मिट्टी का बर्तन लेकर नाचती हुईघर-घर जाकर तेल माँगती हैं। इस नृत्य में गाया जाता है—"सुहागण घाल तेल, घुड़लौ घुमे छै।" जोधपुर नरेश राव सातल की याद में यह नृत्य किया जाता है जिन्होंने अजमेर के सामंत मल्लू खाँ के सेनापति घुड़लै खाँ को मारकर पीपाड़ से अगवा की गई. तीजणियो को मुक्त कराया था।

अग्नि नृत्य – बीकानेर के जसनाथी सिद्धों द्वारा 'फतै-फतै' के उद्घोष के साथ तपते अंगारों पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों (भक्तों) को रोमांचित कर देता हैं।यह नृत्य फाल्गुन-चैत्र के .....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

अध्याय – II

वाद्य यंत्र

राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र सामान्य जन में प्रचलित "वाद्य" यन्त्र को लोक वाद्य कहा जाता है।

लोक वाद्यों को सामान्यतः चार प्रकार से जाना जा सकता है :

(I) तत् वाद्य (2) घन वाद्य (3) अवनद्ध वाद्य (५) सुषिर वाद्य

घन वाद्य	अवनद्ध वाद्य	**सुषिर वाद्य**	तत् वाद्य
चोट या आघात से स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य)	**(चमड़े से मढ़े हुए लोक वाद्य(**	**(जो वाद्य फूंक से बजते हो(**	**(तारों के द्वारा स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य(**
मंजीरा, झांझ, थाली, रमझौल, करताल, खड़ताल, झालर, घुंघरु, घंटा, घुरालियां, भरनी, श्रीमंडल, झांझ, कागरच्छ, लेजिम, तासली, डांडिया।	चंग, डफ, धौंसा, तासा, खंजरी, मांदल, मृदंग, पखावज, डमरू, ढोलक, नौबत, दमामा, टामक (बंब), नगाड़ा।	बांसुरी, अलगोजा, शहनाई, पूंगी, सतारा, मशक, नड़, मोरचंग, सुरणाई, भूंगल, मुरली, बांकिया, नागफनी, टोटो, करणा, तुरही, तरपी, कानी।	जन्तर, इकतारा, रावणहत्था, चिंकारा, सारंगी, कामायचा, सुरिन्दा, रबाज, तन्दूरा, रबाब, दुकाको, सुरिन्दा, भपंग, सुरमण्डल, केनरा, पावरा।

घन वाद्य

ये वाद्य धातु से निर्मित होते है, जिनको आपस में टकराकर या डण्डे की सहायता से बजाया जाता हैं।

प्रमुख घन वाद्य (Musical Instruments of Rajasthan)

1. घुंघरू

लोक नर्तकों एवं कलाकारों का प्रिय वाद्य 'घुंघरू' पीतल या कांसे का बेरनुमा मणि का होता है। इसका नीचे का भाग कुछ फटा हुआ होता है तथा अन्दर एक लोहे, शीशे की गोली ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान प्रयोगशाला सहायक (Lab Assistant)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 Ist शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (Ist शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8504091672, 9694804063, 8233195718

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

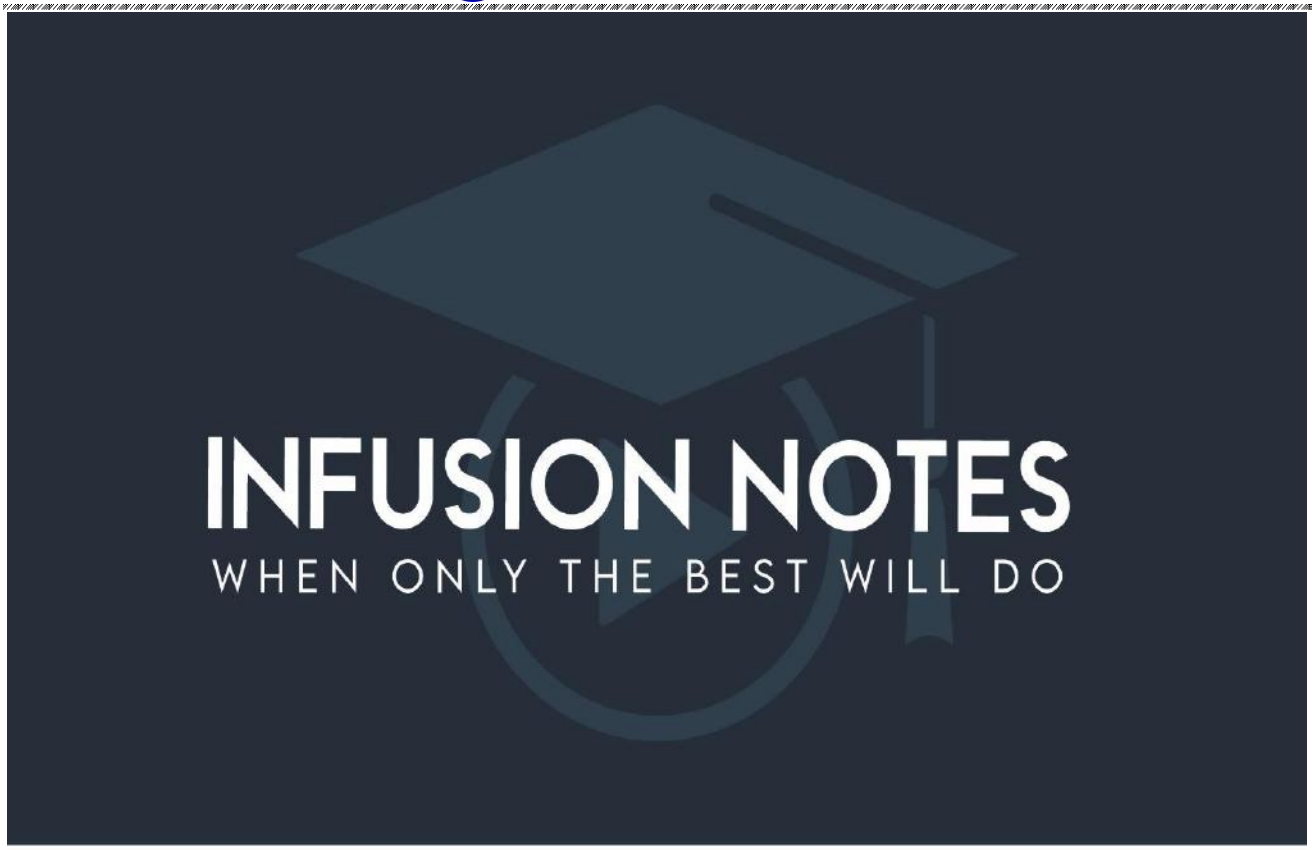

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/